प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

शिक्षक वह नहीं, जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूंसे, शिक्षक वह है, जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे।
- डॉ. राधाकृष्णन

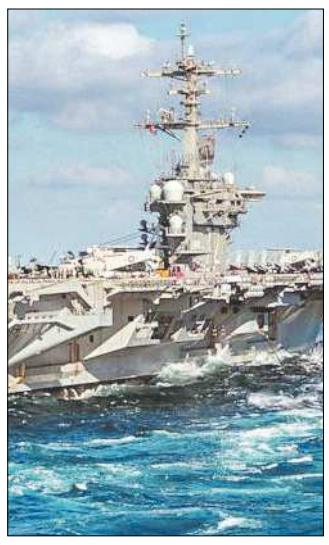

ट्रंप द्वारा ईरान पर हमले का फैसला वापस ले लेने के बावजूद खाड़ी क्षेत्र में तनाव कम होने की फिलहाल उम्मीद नहीं है। दरअसल ईरान के आक्रामक तेवर भी तनाव बढ़ाने का काम कर रहे हैं।

तनाव से बढ़ती आशंकाएं

होर्मुज जलडमरूमध्य के पास ओमान की खाड़ी में तेल टैंकरों पर हुए हमले के लिए ईरान को जिम्मेदार ठहराए जाने, और उसके बाद तेहरान द्वारा अपनी सीमा में बताकर अमेरिकी ड्रोन को मार गिराए जाने के बाद दोनों देशों के बीच तनाव जिस तरह चरम पर पहुंच गया है, वह पूरी दुनिया के लिए चिंताजनक है। इस बीच डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान पर हमले का आदेश देने के बाद आखिरी वक्त पर जिस तरह उसे वापस लिया, उससे सामान्य स्थिति की बहाली की एक झीनी-सी उम्मीद जरूर जगी। तब तो और भी, जब उसके बाद ट्रंप ने ईरान के साथ बेहतर रिश्ते की बात भी कही। लेकिन शुरू से ही ईरान के खिलाफ बेहद आक्रामक रुख अपनाने के कारण ट्रंप प्रशासन का तेहरान के प्रति अपना रवैया बदलने की उम्मीद नहीं है। मुश्किल यह है कि खुद ईरान का भी इस मामले में रुख बहुत सख्त है। उसने ट्रंप को चेतावनी दी है कि अगर उन्होंने हमले की भूल की, तो वह पश्चिम एशिया को युद्ध की आग में झोंक देगा, जिससे अमेरिकी हितों को गंभीर नुकसान होगा। हद है कि आर्थिक रूप से बर्बाद हो जाने के बावजूद ईरान अपने आक्रामक तेवर जारी रखे हुए है। जबकि वह जानता है कि अमेरिका हमला न करके भी उसे और जर्जर कर देने की दिशा में कदम उठा सकता है। ट्रंप ने न केवल ईरान पर और सख्त प्रतिबंध लगाने की बात कही है, बल्कि ईरान की उस हथियार प्रणाली पर साइबर हमले का भी दावा किया है, जो रॉकेट और मिसाइल लांचर को नियंत्रित करती है। विडंबना सिर्फ यही नहीं है कि अमेरिका और ईरान के बीच की तनातनी में वे यूरोपीय देश नेपथ्य में हैं, जिन्होंने बराक ओबामा के दौर में ईरान के साथ बेहद महत्वाकांक्षी समझौता किया था, बल्कि ट्रंप प्रशासन पश्चिम एशिया के मामले में उस सऊदी अरब पर अतिशय निर्भर है, जो ईरान का दुश्मन है। जाहिर है, खाड़ी क्षेत्र में तनाव कम करने के लिए ईरान के अलावा सऊदी अरब और क्षेत्र के दूसरे देशों को भी वार्ता की मेज पर बैठना होगा, जिसकी संभावना फिलहाल तो नहीं दिखती। जहां तक भारत का सवाल है, तो अमेरिका-ईरान तनाव का खामियाजा पहले ही उसे ईरान से तेल आयात बंद कर भुगतना पड़ा है। अब ईरान के ऊपर से हवाई सेवा स्थगित करने का आर्थिक नुकसान तो होगा ही, कच्चे तेल की कीमत में भी तेजी आएगी। लेकिन भारत की सबसे बड़ी चिंता खाड़ी क्षेत्र में काम कर रहे लगभग अस्सी लाख भारतीयों के सुरक्षा से जुड़ी है।

मतभेद दूर करने का अवसर

अमेरिकी विदेश मंत्री माइक पोम्पियो की भारत यात्रा दुनिया के सबसे पुराने और विश्व के सबसे विशाल लोकतांत्रिक देशों के बीच बेहतर रिश्ते का अवसर होना चाहिए।

सुरेंद्र कुमार

किसी भी डांस फ्लोर पर सुंदर प्रदर्शन के लिए दोनों भागीदारों को एक-दूसरे को खींचना या धक्का नहीं देना चाहिए, बल्कि एक-दूसरे का पूरक बनना चाहिए और एक दूसरे का सहयोग करना चाहिए एक दूसरे की श्रेष्ठतम क्षमता को बाहर लाने में मदद करनी चाहिए। क्या यह राष्ट्रों के बीच संबंधों के लिए भी सही नहीं है? एक दूसरे को 'स्वाभाविक सहयोगी' और 'रणनीतिक भागीदार' कहना ही पर्याप्त नहीं है, भागीदारों को शब्दों और भावनाओं में इस विचार के साथ जीना चाहिए। समय-समय पर राष्ट्रों के संबंधों में कुछ तनाव देखे जा सकते हैं, इन पर ध्यान दिया जाना चाहिए और इन्हें खत्म करना चाहिए। उनमें सभी मुद्दों पर स्पष्ट, शांतिपूर्ण ढंग से और निष्पक्ष रूप से चर्चा करने की परिपक्वता होनी चाहिए, ताकि स्वीकृत समाधान तक पहुंचा जा सके।

एक सप्ताह पहले अमेरिकी विदेश मंत्री माइक पोम्पियो ने कहा था, मोदी है, तो मुमकिन है। भारत-अमेरिकी संबंधों के संदर्भ में उन्होंने कहा था कि मोदी के साथ द्विपक्षीय रिश्तों में प्रगति संभव है। काश, हम भी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बारे में ऐसा ही कह पाते! वह मोदी को सार्वजनिक रूप से प्रिय मित्र कह सकते हैं, और उन्हें पसंद करने का दावा कर सकते हैं, पर साथ ही हर्ले डेविडसन मोटरसाइकिल पर मात्र 50 फीसदी आयात शुल्क कम करने पर मोदी का मजाक उड़ा सकते हैं और भारत को टैरिफ किंग कहकर बदनाम भी कर सकते हैं। हां, यह सच है कि कई अमेरिकी उत्पादों पर भारत के आयात शुल्क अधिक हैं, लेकिन ट्रंप ने जिस तरीके से इस मुद्दे को उठाया, वह सही नहीं है! खुद को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ सौदेबाज मानने वाले ट्रंप को इस बात का एहसास होना चाहिए, जो मोदी हमेशा कहते हैं, कि सबसे अच्छा सौदा वह होता है, जिसमें दोनों ही पक्ष विजेता होने का दावा कर सकें!

भारत-अमेरिकी संबंधों की समस्याओं का समाधान असंभव नहीं है, लेकिन इन्हें व्यावसायिक लेन-देन के संकीर्ण चश्मे से देखने के बजाय व्यापक रणनीतिक दृष्टि और समग्र द्विपक्षीय संबंधों को ध्यान में रखते हुए परिपक्वता और संवेदनशीलता के साथ निपटाना चाहिए। मामूली समस्याओं के रचनात्मक समाधान से न केवल क्षेत्रीय, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी सकारात्मक असर पड़ेगा। वह कितना अच्छा दिन होगा, जब भारत और अमेरिका के लोग कह सकेंगे कि ट्रंप और मोदी हैं, तो सब कुछ मुमकिन है!

सार्वजनिक धारणा के विपरीत बहुस्तरीय और बहुआयामी भारत-अमेरिकी संबंध कभी बहुत अच्छे नहीं रहे, लेकिन अब इसका कायाकल्प हो गया है। वर्ष 2018 में वस्तु एवं सेवाओं का द्विपक्षीय व्यापार 141 अरब डॉलर को पार कर गया। पिछले सात वर्षों में भारत में अमेरिका का रक्षा निर्यात काफी बढ़ा है। 300 से ज्यादा संयुक्त सैन्याभ्यास हुए हैं, तो अंतरिक्ष अनुसंधान से लेकर मानसून की भविष्यवाणी तक और कृषि से लेकर शिक्षा तक हर प्रासंगिक क्षेत्र को कवर करने वाले 50 से ज्यादा द्विपक्षीय समझौतों पर हस्ताक्षर हुए हैं। हिंद-प्रशांत क्षेत्र को लेकर दोनों के दृष्टिकोण में तालमेल है, दोनों के बीच 2+ 2 रणनीतिक एवं व्यावसायिक वार्ता हुई है, अमेरिकी राष्ट्रपति और भारतीय प्रधानमंत्री के बीच बातचीत होती रहती है। ट्रंप अक्सर कहते हैं कि हर्ले डेविडसन पर आयात शुल्क को कम क्यों नहीं किया जाता। अमेरिकी बादाम और अखरोट का स्वाद लेने वाले भारतीयों की संख्या हर्ले का उपयोग करने वालों की तुलना में बहुत ज्यादा है। मोटरसाइकिल पर चलने वाले लाखों भारतीय हर्ले नहीं खरीदते। इसलिए हर्ले भारतीय बाजारों में नहीं छा सकती। हमें कृषि क्षेत्र को छोड़कर अन्य क्षेत्रों के उत्पादों पर शुल्क घटाना चाहिए, क्योंकि किसानों का संकट भारत की वास्तविक समस्या है।

एक देश जो महाशक्ति बनने की आकांक्षा रखता है, उसे विदेशी प्रतिस्पर्धा के विरुद्ध अपने उद्योग का अत्यधिक संरक्षण नहीं करना चाहिए। भारत में दूरसंचार और ऑटोमोबाइल क्षेत्र में विदेशी प्रतिस्पर्धा ने जो चमत्कार किए हैं, वह एक स्पष्ट सबक होना चाहिए। आय में भारी असमानता को देखते हुए, भारत में स्टेंट, घुटने का कवर और आम लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली कई जेनेरिक दवाओं जैसी मेडिकेयर वस्तुओं की कीमतों पर से नियंत्रण हटाया नहीं जा सकता, क्योंकि इससे इनके दाम बढ़ जाएंगे। तरजीही राष्ट्रों की श्रेणी वाली सुविधाओं (जीएसपी) की फिर से बहाली के लिए हमें अमेरिका के सामने गिड़गिड़ाना नहीं चाहिए, क्योंकि भारत की अर्थव्यवस्था आज वह नहीं है, जो 1975 में थी। इसके बजाय हमें उन चीनी उत्पादों की आपूर्ति की संभावनाएं तलाशनी चाहिए, जो 25 फीसदी अमेरिकी शुल्क के कारण महंगे हो गए हैं। अकेले वालमार्ट हर वर्ष 15 अरब डॉलर की चीनी वस्तुओं का आयात करता है। कुछ अमेरिकी कंपनियां चीन से अपने विनिर्माण संयंत्रों को बाहर ले जाना चाहती हैं, अगर हम उन्हें व्यवसाय अनुकूल माहौल प्रदान करने में सक्षम होते हैं, तो वे भारत में अपने संयंत्र लगा सकती हैं।

दोनों देश अतीत के संकोच से बाहर निकल आए हैं। भारत और अमेरिका ने विभिन्न अवसरों पर एक-दूसरे की मदद की है और भागीदारी बढ़ाई है, जो दोनों देशों के नेतृत्व के आपसी विश्वास और भरोसे को दर्शाता है। जिम्मेदार साझेदार के रूप में उन्हें एक दूसरे की सीमाओं का ध्यान रखना चाहिए। भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए ईरान का तेल महत्वपूर्ण है। भारत और ईरान के बीच अन्य मामलों में भी गहरे संबंध हैं। रूस का एस-400 विमान भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए जरूरी है। भारत को एक विकसित देश में बदलने के मोदी के दृष्टिकोण की सफलता के लिए अमेरिका के साथ निकट संबंध आवश्यक है। इससे भारत की वैश्विक महत्वाकांक्षाओं को भी बल मिल सकता है। लेकिन क्या भारत को अपनी रणनीतिक स्वायत्तता खो देनी चाहिए और रक्षा जरूरतों के लिए अपनी अन्य जरूरतों को भुला देना चाहिए? ऐसा करना बुद्धिमानी नहीं होगा। अमेरिका और चीन के बीच वैश्विक वर्चस्व के छद्म युद्ध में भारत को चुप बैठना चाहिए, ताकि दोनों उसे अपने पाले में खींचें। भारत ट्रंप के अपारंपरिक तरीके से कैसे तालमेल बिठाता है, यह हमारे नवनियुक्त विदेश मंत्री की परीक्षा है।

-लेखक इंडो-अमेरिकन फ्रेंडशिप एसोसिएशन के संस्थापक अध्यक्ष हैं।

अंतर्ध्वनि

>> बेन ओकरी

कविता हमारे भीतर की देवतुल्य मौजूदगी के प्रति एक संकेत है

कविता की असाधारणता का कारण बहुत स्पष्ट है। कविता उस मूल शब्द का वंशज है, जिसे हमारे संतों ने सृष्टि की उत्पत्ति का कारक माना है। कविता अपने उच्चांक पर सृष्टि की सर्जनात्मक शक्ति को अपने भीतर जीवित रखती है। वे सभी चीजें, जिनके पास आकार होता है, जो परिवर्तित होती हैं, जो अपना कायांतरण कर लेती हैं - कविता उन सभी चीजों का सशरीर अवतार है। शब्द का वजन कौन माप सकता है, भले एक पलड़े में आप सत्य का हल्का पंख रख दें, दूसरे में शब्द - क्या वैसा संभव है? फिर भी हृदय के भीतर शब्दों का कितना वजन होता है, हमारी कल्पनाओं, स्वप्नों में, युगों-युगों से चली आ रही अनुगूंजों में, उतने ही टिकाऊ जितने कि पिरामिड। हवा से भी हल्के होते हैं शब्द, फिर भी उतने ही रहस्यमयी तरीके से चिरस्थायी, जितना कि जिया गया जीवन। कविता हमारे भीतर की देवतुल्य मौजूदगी के प्रति एक संकेत है और हमें अस्तित्व के उच्चतम स्थानों तक ले जा एक गूंज में बदल जाने का कारण बनती है। कवि आपसे कुछ नहीं चाहते, सिवाय इसके कि आप अपने आत्म की गहनतम ध्वनि को सुनें। वे राजनेताओं की तरह आपसे वोट नहीं मांगते। सच्चे कवि सिर्फ यही चाहते हैं कि आप इस पूरी सृष्टि के साथ किए गए उस अनुबंध का सम्मान करें, जो आपने इसकी वायु के अदृश्य जादू से अपनी पहली सांस खींचते समय किया था। कविता हमें, हमारे यकसांपन के अचंभे की ओर ले आती है। यह हमारे भीतर विलीन हो चुके उस बोध को फिर से जगा देती है कि अंततः हम सब एक अनंत परिवार के ही हिस्से हैं और उन अनुभूतियों को एक-दूसरे से साझा कर रहे हैं, जो नितांत हमारे लिए अद्वितीय हैं, और उन अनुभूतियों को भी, जो सिर्फ हमारी नहीं, हर किसी की हैं। जब तक कविता हमारी बुद्धि को सवालों के दायरे में भेजती रहेगी, हमारी मुलायम मनुष्यता को गहरे से छूती रहेगी।

-नाइजीरियाई कवि और उपन्यासकार

मंजिलें और भी हैं

>> गेनाभाई दर्गाभाई पटेल

मजाक उड़ाने वालों ने भी शुरू की अनार की खेती

मेरा जन्म गुजरात के बनासकांठा जिले के सरकारी गोलिया गांव में हुआ। बचपन से ही मेरे दोनों पांव पोलियो से ग्रस्त हैं। मेरे पिताजी पारंपरिक किसान थे। बचपन में मेरे भाई खेतों में पिताजी का हाथ बंटाते थे। लेकिन मेरे पिताजी को लगता था कि मैं खेती में उनकी मदद नहीं कर सकता, इसलिए वह चाहते थे कि मैं अपनी पढ़ाई पूरी करूं। बहुत कम उम्र में ही मुझे गांव से 30 किलोमीटर दूर एक हॉस्टल में भेज दिया गया, जहां से मैं अपने तिपहिया साइकिल से स्कूल जा सकता था। मैंने 12वीं तक पढ़ाई की। लेकिन माता-पिता अनपढ़ थे, तो उन्हें समझ नहीं आया कि मुझे आगे की पढ़ाई के लिए कहां और कैसे भेजा जाए। नतीजतन मुझे लौटकर गांव आना पड़ा।

गांव आने पर मैं अपने पिता और भाई के साथ खेतों पर जाने लगा। फिर मैंने ट्रैक्टर चलाना सीखा। मेरे पिता गेहूं, बाजरा जैसी फसलें उगाया करते थे। उस समय बोरवेल की मदद से सिंचाई करके खेती होती थी, जिसमें पानी की बहुत बर्बादी होती थी। चूंकि मुझे भी अब खेती करनी थी, इसलिए मैं ऐसी फसल की खोज में जुट गया, जिसे दिव्यांग होने के बावजूद मैं आसानी उगा सकूं और एक बार बोने के बाद लंबे समय तक उससे उपज मिल सके। इस क्रम में मैंने कई फसलों पर हाथ आजमाया। फिर अन्य विकल्प की तलाश में मैं स्थानीय कृषि अधिकारी से मिला, कृषि विश्वविद्यालयों का दौरा किया और कृषि मेले में भी गया। करीब तीन महीने तक गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान में घूमता रहा। मैंने महाराष्ट्र के किसानों को अनार की खेती करते देखा। महाराष्ट्र का मौसम गुजरात की तरह का ही होता है। अनार में पूरे साल फूल आते हैं और इसे ज्यादा देखभाल की भी जरूरत नहीं होती है। वर्ष 2004 में मैंने महाराष्ट्र से अनार के करीब 18 हजार पौधे लाकर अपने भाइयों की मदद से खेतों में लगाया। गांव के दूसरे किसान कहते थे कि मेरा दिमाग फिर गया। लेकिन मुझे यकीन था कि मेरी जमीन पर अनार उग सकते हैं। मेरे भाई और भतीजों ने मुझ पर भरोसा किया और इस काम में पूरा सहयोग दिया। वर्ष 2007 में अनार में फल आने लगे। लेकिन इन फलों को बेचना बड़ी चुनौती था, क्योंकि पूरे राज्य में अनार का बाजार नहीं था। मैंने अनार उगाने वाले अन्य किसानों को संगठित किया और ट्रकों में अनार लादकर जयपुर, दिल्ली के बाजारों में उन्हें बेचने की व्यवस्था की। हालांकि यह ज्यादा दिन नहीं चल पाया। हम सीधे उपज खरीदने वाले व्यापारियों की तलाश में थे। लेकिन व्यापारी हमसे तभी फल खरीदते, जब उन्हें यह भरोसा होता कि हमारे पास फल पर्याप्त मात्रा में हैं। इसलिए हमने एक योजना के तहत हरेक किसान को अलग-अलग खेतों में बैठने के लिए कहा और व्यापारियों को एक ही खेत कई बार दिखाया। व्यापारियों को लगा कि हमारे पास काफी मात्रा है और इस तरह हमें हमारा पहला ऑर्डर मिला। अपनी लागत के मुकाबले मुझे दस लाख रुपये से अधिक का मुनाफा हुआ। मेरी सफलता देखकर और भी किसान पारंपरिक खेती छोड़कर बागवानी करने लगे। मैंने किसानों के लिए वर्कशॉप का भी आयोजन करवाया, जिसमें कई कृषि वैज्ञानिक और जानकार आए थे। अब हमारे जिले से दुबई, श्रीलंका और बांग्लादेश में अनारों का निर्यात होता है। पद्मश्री मिलना मेरे लिए किसी सपने से कम नहीं था। मेरा मानना है कि जिंदगी चुनौतियों के बिना कुछ नहीं है। जहां लोग रुक जाते है, मैं वहीं से शुरुआत करता हूं। मुझे कभी नहीं लगा कि जो काम दूसरे कर सकते हैं, वह मैं नहीं कर सकता।

अब बनासकांठा जिले से श्रीलंका और बांग्लादेश सहित कई देशों में अनारों का निर्यात होता है।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित

दर्द भरा यथार्थ

मुजफ्फरपुर की दुखद घटना के कारण सिर्फ बिहार के मुख्यमंत्री बदनाम नहीं हुए हैं, भारत भी बदनाम हुआ है। प्रधानमंत्री नए भारत के सपने को साकार करना चाहते हैं, तो स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार उनकी प्राथमिकताओं में होना चाहिए।

तवलीन सिंह

बीता सप्ताह अजीब-सा रहा। एक तरफ राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद का संसद में भाषण था, जिसमें नए भारत का सुनहरा चित्र उन्होंने अपने शब्दों से खींचा। समृद्ध, सुरक्षित, स्वच्छ, सुंदर और शक्तिशाली नया भारत, सितारों से आगे जाकर अंतरिक्ष में कदम रखने वाला नया भारत। दूसरी तरफ वर्तमान भारत का दर्द भरा यथार्थ देखने को मिला। मैं उस यथार्थ की बात कर रही हूं, जो हमें बिहार के एक सरकारी अस्पताल में देखने को मिला। छोटे बच्चों का तड़प-तड़प कर मर जाने वाला यथार्थ। मुजफ्फरपुर के उस बेहाल अस्पताल श्रीकृष्ण मेडिकल कॉलेज ऐंड हॉस्पिटल का यथार्थ। इतना बेहाल था वह सरकारी अस्पताल कि पीने का पानी तक उपलब्ध नहीं था। न पर्याप्त बिस्तर थे, न डॉक्टर, न बीमार बच्चों के लिए आईसीयू की सुविधाएं। बुनियादी सुविधाओं का इतना अभाव अगर न होता, तो शायद इतने बच्चे न मरते।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जब उस अस्पताल में अपनी संवेदना दिखाने पहुंचे, तो मृत बच्चों के मां-बाप ने उन पर अपना रोष निकाला। क्यों न निकालते? जब चार साल पहले उसी अस्पताल में इसी मंत्री ने जाकर आधुनिकीकरण के बड़े-बड़े वादे किए थे? उसके बाद न केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने कभी वापस लौटकर देखने का प्रयास किया कि उनके वादे पूरे हुए हैं या नहीं और न ही बिहार के मुख्यमंत्री ने, जिन्हें न जाने क्यों, सुशासन बाबू होने का खिताब दिया गया है।

मुजफ्फरपुर की उस दुखद घटना के कारण सिर्फ बिहार के मुख्यमंत्री बदनाम नहीं हुए हैं, बदनाम नरेंद्र मोदी भी हुए हैं, बदनाम भारत भी हुआ है। इस तरह की घटनाएं हमेशा विदेशी अखबारों की सुर्खियों में रहती हैं। इसलिए रहती हैं, क्योंकि विकसित देशों में अगर किसी बीमारी में इतनी बड़ी संख्या में बच्चे मरते, जो लाइलाज नहीं है, तो सरकारें गिर जाती हैं। हमारे देश में ऐसा नहीं होता, क्योंकि अभी तक गरीबों के बच्चे ही मरते आए हैं। लेकिन अब गरीब माता-पिता भी जान गए हैं कि पिछले करीब सत्तर साल से उनके साथ अन्याय होता आया है। अब इस अन्याय को वे बर्दाश्त करने को तैयार नहीं हैं।

प्रधानमंत्री नए भारत के सपने को साकार करना चाहते हैं, तो स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार उनकी प्राथमिकताओं की सूची में होना चाहिए। कई किस्म के सुधार जरूरी हैं। पहला सुधार यही होना चाहिए कि सरकारी अधिकारियों और राजनेताओं के लिए सरकारी अस्पतालों में इलाज अनिवार्य कर दिया जाए। जिस दिन राजनेताओं और आला अधिकारियों के बच्चों का इलाज सरकारी अस्पतालों में होने लगेगा, उस दिन से सुधार अपने आप होने लग जाएगा। उस दिन से इन अस्पतालों में डॉक्टर भी पूरी संख्या में दिखने लगेंगे, उस दिन से स्वच्छता भी दिखने लगेगी और इसका लाभ उन गरीबों को मिलेगा, जिनके पास निजी अस्पतालों में इलाज करवाने की क्षमता नहीं है।

विशेषज्ञ बताते हैं कि भारत में अपने या किसी रिश्तेदार के इलाज के खर्च के कारण हर वर्ष छह करोड़ लोग गरीबी रेखा के नीचे धकेल दिए जाते हैं। सरकारी अस्पताल इतने बेकार हैं कि लगभग 80 प्रतिशत भारतीय निजी अस्पतालों में इलाज करवाने के लिए मजबूर हैं। नरेंद्र मोदी ने अपने पहले कार्यकाल में अगर स्वास्थ्य सेवाओं पर भी उतना ही ध्यान दिया होता, जितना उन्होंने स्वच्छ भारत आंदोलन पर दिया, तो अभी तक कम से कम भाजपा शासित राज्यों में अस्पतालों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में सुधार दिखने लग गया होता। नए भारत का निर्माण कभी नहीं होगा, जब तक उसमें पुराने भारत की आम सेवाएं कायम रहेंगी।

खुली खिड़की

हथियारों का निर्यात

लगातार बढ़ते सामरिक गतिरोधों के बीच दुनिया के विभिन्न देश अपनी सेना को अत्याधुनिक हथियारों से लैस कर रहे हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक 2014-18 के बीच हथियार निर्यात के मामले में अमेरिका पहले स्थान पर रहा है।

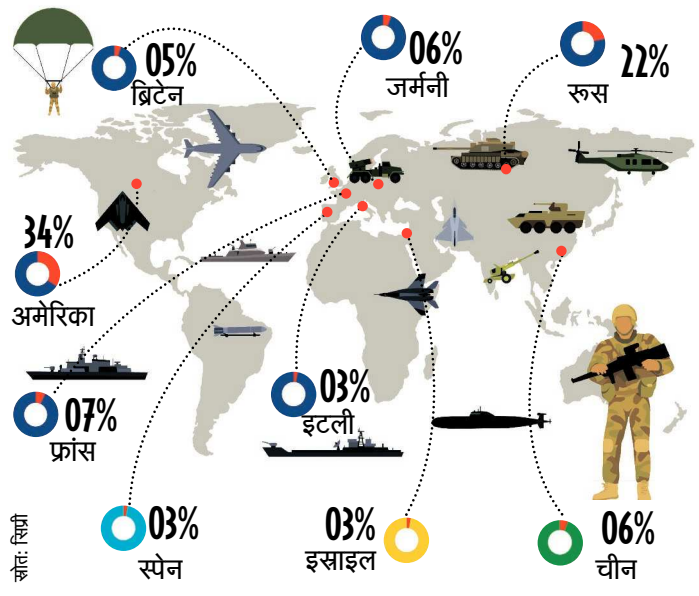

शब्द की शक्ति

किसी समय ओडिशा में लालाबाबू नाम के एक बहुत बड़े जमींदार रहते थे। वह अपना ज्यादातर जीवन भोग-विलास और झगड़े-मुकदमे में बिताते थे। एक बार वह अपनी जमींदारी के गांव से रात के समय घर वापस लौट रहे थे। रास्ता चलते हुए उन्होंने सुना कि एक घर में एक लड़की अपने बूढ़े पिता से कह रही थी, बाबा, रात हुए बहुत देर हो गई है। आपने अभी तक दीया क्यों नहीं जलाया? इस तरह अंधेरे में क्यों बैठे हुए हैं? ठहरिए, मैं दीया जलाए देती हूं। लड़की के ये शब्द रास्ते से गुजरते हुए लालाबाबू के कानों में पड़े। अचानक उनके दिल पर इन शब्दों का अलग ही असर हुआ। वह गंभीर बनकर सोचने लगे, इस लड़की ने एक जबर्दस्त सत्य कह डाला है। और उसके ये शब्द मेरे लिए भी उतने ही सच हैं, जितने उसके पिता के लिए। मेरी यह जवानी भोग-विलास में बीत जाएगी। फिर बुढ़ापा आएगा। जीवन की संध्या के समय भी मेरे इस प्रकार के व्यवहार से मेरे दिल में ज्ञानरूपी दीपक प्रकट नहीं हो पाएगा। क्या मेरी पूरी जिंदगी इस तरह अंधेरे में ही बीत जाएगी? यह सोचते-सोचते वह अपने घर पहुंचे और निर्णय ले लिया कि दुनियावी वस्तुओं की चिंता अब वह नहीं करेंगे। फिर तीस साल की भरी जवानी में उन्होंने सांसारिक जीवन से मुंह मोड़ लिया और वृंदावन जाकर भगवान की भक्ति में अपने दिन व्यतीत करने लगे।

सत्संग

-संकलित

हरियाली और रास्ता

खरगोश, दोस्त और शिकारी कुत्ते

एक खरगोश की कहानी, जिसके संकट के समय में एक भी दोस्त काम नहीं आया।

जंगल में एक गाय, एक बकरी, एक घोड़ा और एक गधा मिल-जुलकर रहते थे। कभी-कभी हाथी और तोता भी आ जाया करते थे। पास ही एक पेड़ के नीचे एक खरगोश रहता था। एक दिन वह उनके पास गया और बोला, तुम लोग मुझे भी अपना मित्र बना लो। जानवरों ने कोई आपत्ति नहीं की। अब खरगोश रोज उनके पास आकर बैठ जाता और कहानियां सुनकर अपना मन बहलाया करता था। एक दिन वह बैठा कहानियां सुन रहा था कि अचानक शिकारी कुत्तों की आवाज सुनाई दी। खरगोश डर गया। पर उसने सोचा, आज तो ये कुत्ते मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मेरे इतने सारे दोस्त जो मेरे साथ हैं। वह गाय से बोला, माता, तुम मुझे पीठ पर बिठा लो। जब शिकारी कुत्ते आएं, तो उन्हें अपनी सींगों से मारकर भगा देना। गाय बोली, मेरे घर लौटने का समय हो गया है। मैं अब नहीं रुक सकती। खरगोश घोड़े से बोला, बड़े भाई, तुम मुझे पीठ पर बिठा लो। तुम तो एक दुलत्ती मारोगे, तो कुत्ते दूर जाकर गिरेंगे। घोड़ा बोला, पर तुम मेरे ऊपर चढ़ोगे कैसे? मुझे बैठना नहीं आता। मैं तो सोता भी खड़े-खड़े ही हूं। ऊपर से मेरे पांव भी दुख रहे हैं। तुम किसी और से बात कर लो। खरगोश गधे के पास जाकर बोला, मित्र, तुम मुझे अपनी पीठ पर बिठाकर शिकारी कुत्तों से बचा लो।

गधा बोला, मैं तुम्हें जरूर बचाता, पर मुझे अभी घर जाना है। अगर मैं समय पर न लौटा, तो मालिक डंडे मार-मारकर मेरा कचूमर निकाल देगा। खरगोश मदद की उम्मीद में बकरी की तरफ चला। बकरी ने उसे मना करते हुए कहा, भैया, इधर मत आना। मुझे शिकारी कुत्तों से डर लगता है। कहीं तुम्हारे साथ मैं भी न मारी जाऊं। तभी पीछे से कुत्ते आ गए और बेचारा खरगोश दोस्ती के चक्कर में मारा गया।

जरूरत के समय ही पता चलता है कि सच्चा दोस्त कौन है और कौन नहीं।